कक्षा - नवम्

"कबीरदास"

प्रश्न १- मानसरोवर से कवि का क्या आशय है ?
उत्तर १- सामान्य अर्थ में मानसरोवर एक झील का नाम है। यह झील तिब्बत में स्थित है। इस झील में हंस मोती चुगते हैं।

गहन अर्थ में मानसरोवर मन रूपी पवित्र झील है जहाँ जीवात्मा परमात्मा के रूप में वास करती है अर्थात हमारे मन रूपी सरोवर में आत्मा परमात्मा के रंग में रंगकर क्रीड़ाएँ करती है। ईश्वर प्राप्ति के आनंद को छोड़कर वह अन्यत्र नहीं जाना चाहती और परमात्मा रूपी मोती को प्राप्त कर सर्वानंद की अनुभूति करना चाहती है।

प्रश्न २- कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है ?
उत्तर २- कवि ने सच्चे प्रेमी की कसौटी बताते हुए कहा है कि सच्चा प्रेमी दुनयावी बातों से ऊपर उठ जाता है। ऐसा सच्चा ईश्वर प्रेमी जब दूसरे ईश्वर प्रेमी से मिलता है तो दोनों के मन के विषय विकार, भ्रम इत्यादि समाप्त हो जाते हैं। वह ईश्वर के रंग में रंगे हुए नज़र आते हैं। माया मोह के बंधन टूट कर बिखर जाते हैं। संतों का समागम ईश्वर प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त करता है। मन के मिलने पर मन का वियोग रूपी विष अमृत में बदल जाता है।

प्रश्न ३- तीसरे दोहे में किस प्रकार के ज्ञान का महत्त्व दिया है ?
उत्तर ३- तीसरे दोहे में कबीर ने अहंकार रहित सहज ज्ञान को महत्त्व दिया है। सहज ज्ञान अथवा आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करने वाला ही ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। आध्यात्मिक ज्ञान के आभाव में व्यक्ति राम और रहीम के चक्रव्यूह में उलझा रहता है। ईश्वर अथवा ईश्वरीय प्रेम को सहज ज्ञान द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न ४- इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है ?
उत्तर ४- जो निष्पक्ष भाव से सांप्रदायिक (धर्म तथा जाती का भेद भाव) भावना से दूर रहकर निश्छल मन से ईश्वर का स्मरण करता है वही सच्चा संत कहलाता है। सच्चा संत ईश्वर तथा ईश्वरीय शक्ति में विशवास रखता है संबंधों में नहीं।

प्रश्न ५- अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है ?

उत्तर ५-

- कबीर के अंतिम दो दोहों में धार्मिक भेद भाव में निहित मानव स्वार्थों का उद्घोष (घोषणा) राम व रहीम में उलझा व्यक्ति सच्चे ईश्वर के दर्शन नहीं कर पाता।
- ईश्वरीय शक्ति को नमन करने वाला ही पराकाष्ठाओं का स्पर्श करता है।
- कबीर के अनुसार ऊँचे कुल में जन्म लेने मात्र से कोई व्यक्ति ऊँचा नहीं हो जाता। उसके सत्कर्म उसे माहान बनाते हैं।
- निम्न कुल में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी अपने गुणों कि सुवास्ना से सारे जग को प्रकाशित कर सकता है।

हिंदू मुसलमान में भेद करना तथा कुल-जाति आदि की श्रेष्ठता को मानना मन की संकीर्णताएँ हैं।

प्रश्न ६- किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर ६- किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है। ऊँचे कुल में जन्म लेने मात्र से व्यक्ति महान नहीं बन जाता है। खजूर का पेड़ बहुत ऊँचा होने के बावजूद पथिक के लिए निरर्थक होता है क्योंकि उसके फल यात्री की पहुँच से दूर होते हैं तथा वह पेड़ यात्री को शीतल छाया भी प्रदान नहीं कर पाते। ऊँचे कुल में जन्म लेने वाले दुःशासन और दुर्योधन महान योद्धा होते हुए भी महान न बन सके जबकि तुलसीदास, कबीरदास, रैदास आदि कवि सामान्य घरों से संबंधित होकर भी हिंदी साहित्य के आधार स्तंभ बने।

प्रश्न ७- काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार में, भूँकन दे झक मारी।

उत्तर ७- **<u>भाव सौंदर्य</u>-** प्रस्तुत पंक्तियों में कबीरदास जी सहज मार्ग द्वारा ज्ञान की ऊँचाइयों को प्राप्त करने का आग्रह करते हैं। सच्चा संत समाज की आलोचना से विचलित नहीं होता और ईश्वर प्राप्ति के रास्ते पर निरंतर आगे बढ़ता रहता है।

शिल्प सौंदर्य-

- ज्ञान को हाथी के समान विशाल बताया गया है।
- सहज दुलाची डारी में रूपक अलंकार है।
- 'स्वान रूप संसार' में उपमा अलंकार है।
- 'झख मारि' आदि सार्थक मुहावरों का प्रयोग किया गया है।
- आलोचक समाज की तुलना कुत्ते से की गई है।
- दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।
- सधुक्कड़ी भाषा (खिचड़ी भाषा), पंचमेल भाषा का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न ८- मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है ?
उत्तर ८- मनुष्य ईश्वर को मंदिर, मस्जित, दरगाह में ढूँढ़ता है। जबकि ईश्वर मनुष्य के मन मंदिर में निवास करते हैं। कबीर ने इन दोहों के माध्यम से आडंबरों का खुलकर विरोध किया है। ईश्वर को तीर्थ स्थानों, क्रिया-कलापों अथवा योग-वैराग्य में ढूँढ़ना हमारी मूर्खता है। सहज प्रेम अथवा सहज मार्ग द्वारा ईश्वर को क्षण-भर में स्वयं के भीतर प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न ९- कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है ?
उत्तर ९- कबीर ने आडंबरों का खंडन किया है। यथा-

- ईश्वर मंदिर मस्जिद में नहीं हमारे मन में वास करते हैं।
- ईश्वर धार्मिक प्रपंचों, योग-वैराग्य, कर्म-कांड आदि करने से प्राप्त नहीं होते।
- सहज प्रेम तथा सहज भाव द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।
- धार्मिक भेद-भाव, सांप्रदायिकता इत्यादि कलुषित भावनाएँ हमें ईश्वर से दूर ले जाती हैं।

  कुल या परिवार नहीं, गुण या अवगुण ही हमारी पहचान बनते हैं।

प्रश्न १०- कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वासों की स्वांस' में क्यों कहा है ?
उत्तर १०- ईश्वर घट घट में वास करते हैं। ईश्वर का निवास प्रत्येक जीवात्मा में है। हमारी साँसों का स्पंदन हमें ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान करवा जाता है। ईश्वर हमारे

रोम रोम में है परंतु हम इस सच को स्वीकार नहीं पाते और ईश्वर को आडम्बरों में ढूँढ़ते हैं।

प्रश्न ११- कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना समान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की ?

उत्तर ११- कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना समान्य हवा से न करके आँधी से की है क्योंकि-

- आँधी में परिवर्तन करने का सामर्थ्य होता है जबकि समान्य हवा में हमें इसका अभाव नज़र आता है।
- आँधी अपने साथ समस्त कलुष अथवा कूड़ा ले जाती है ऐसे ही प्रभु ज्ञान का आवेग विषय-वासनाओं रूपी कूड़े को हमारे मस्तिष्क से दूर कर देता है और हमारी अज्ञानता समाप्त हो जाती है।
- प्रभु ज्ञान का प्रकाश हमारे हर कलुष को दूर कर देता है और हम निर्मल मन से परमात्मा के रंग में रंग जाते हैं।
- प्रभु ज्ञान की आँधी एक क्रांति की तरह हमारी विचारधारा व कार्यों में परिवर्तन ले कर आती है। हम स्वार्थ से उठकर परमार्थ करने लगते हैं। मानव कल्याण हमारा लक्ष्य बन जाता है।

प्रश्न १२- ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर १२- ज्ञान की आँधी अर्थात प्रभु ज्ञान का आवेग भक्त के लिए मुक्ति के अनेक द्वार खोल देता है। भक्त के सारे भ्रम दूर हो जाते हैं। वह निर्मल बुद्धि होकर भक्ति मार्ग में जीवन की पराकाष्ठाओं का स्पर्श करता है। उसका मन, बुद्धि तथा आत्मा ईश्वर के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है। वह विषय वासनाओं में अपना वर्चस्व स्थापित कर साक्षात ईश्वर के दर्शन करने की योग्यता को प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न १३- (i) हिति चित्त की है थूँनी - - - - - - -

(ii) आँधी पीछै जौ जल बूटा - - - - - -

उत्तर १३-

(i) कबीर की इस पंक्ति का आशय यह है कि ज्ञान की अंधी आने पर भ्रम का परदा हट जाता है। माया रूपी रस्सी के बंधन से मुक्त होकर भक्त का मन प्रभु प्रेम के

प्रकाश में स्वछंद विचरण करने लगता है। मन में विराजमान राग-द्वेष, ईर्ष्या आदि स्तंभ गिर जाते हैं। भक्त आत्म-हित के विषय में न सोचकर परमार्थ हेतु कार्य करने लगता है। भ्रम को मजबूती देने वाला मोह समाप्त हो जाता है तथा सर्वस्व ईश्वर का प्रकाश फैल जाता है।

(ii) कबीरदास जी कहते हैं कि आँधी-तूफ़ान के बाद वर्षा की रिमझिम फुहारें वातावरण को शांत व निर्मल कर देती है। ठीक उसी तरह ज्ञान की अंधी के पश्चात प्रभु प्रेम का जल भक्त के मन को आह्लादित कर देता है। सच्चे ज्ञान की वर्षा से सच्चे आनंद को प्राप्त कर भक्त ईश्वर के रंग में रंग जाता है और माया-मोह के कारण अशांत हुआ उसका मन प्रभु-शरण में जाकर शांत हो जाता है।

प्रश्न १४- संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर १४-

- कबीर का धर्म मानव धर्म है।
- मानव की उपासना ही सच्ची ईश्वर उपासना है।
- सच्चा प्रेम मानव तथा उसके ईश्वर दोनों को भाता है।
- धर्म अथवा भक्ति में संकीर्णताओं का कोई स्थान नहीं है।
- ईश्वर सबका है और सब ईश्वर के।
- भगवान अलग-अलग नहीं हैं। मानव उन्हें अपने स्वार्थ से वशीभूत होकर अलग-अलग भागों में विभक्त कर देता है।

कबीर ने उन धार्मिक मान्यताओं का खंडन किया है जो जीर्ण-शीर्ण हो चुकी हैं। उन्होंने मानव-मात्र में ईश्वर का वास बताया है और उसी की उपासना करने का आग्रह किया है।